/

हि. प्र. विभागीय परीक्षा बोर्ड

हिन्दी (मौखिक)

पेपर: 20 परीक्षा सत्र सितम्बर 2021 अंक - 40 समय: 1 घण्टा

(Reading a passage & conversation)

शिक्षा पूर्ण मानव क्षमता प्राप्त करने, एक न्यायसंगत और न्यायपूर्ण समाज के विकास और राष्ट्रीय विकास को बढ़ावा देने के लिए मौलिक है। गुणवत्तापूर्ण शिक्षा तक सार्वभौमिक पहुँच प्रदान करना भारत की निरंतर चढ़ाई, और आर्थिक विकास, सामाजिक न्याय और समानता, वैज्ञानिक उन्नति, राष्ट्रीय एकीकरण और सांस्कृतिक संरक्षण के संदर्भ में वैश्विक मंच पर नेतृत्व करना है। सार्वभौमिक उच्च-गुणवत्ता की शिक्षा हमारे देश की समृद्ध प्रतिभाओं और संसाधनों को व्यक्ति, समाज, देश और दुनिया की भलाई के लिए विकसित करने और अधिकतम करने के लिए सबसे अच्छा तरीका है। भारत में अगले दशक में दुनिया में सबसे अधिक युवा लोगों की आबादी होगी, और उन्हें उच्च गुणवत्ता वाले शैक्षिक अवसर प्रदान करने की हमारी क्षमता हमारे देश के भविष्य का निर्धारण करेगी।

दुनिया ज्ञान परिदृश्य में तेजी से बदलाव के दौर से गुजर रही है। विभिन्न नाटकीय वैज्ञानिक और तकनीकी विकास के साथ, जैसे बड़े डेटा, मशीन सीखने और कृत्रिम बुद्धिमत्ता का उदय, दुनिया भर में कई अकुशल नौकरियों को मशीनों द्वारा लिया जा सकता है, जबकि एक कुशल कार्यबल की आवश्यकता, विशेष रूप से गणित, कंप्यूटर विज्ञान, और डेटा विज्ञान, विज्ञान, सामाजिक विज्ञान और मानविकी के पार बहु-विषयक क्षमताओं के साथ मिलकर अधिक से अधिक मांग में वृद्धि होगी। जलवायु परिवर्तन, बढ़ते प्रदूषण और प्राकृतिक संसाधनों की कमी के साथ, हम दुनिया की ऊर्जा, पानी, भोजन और स्वच्छता की जरूरतों को पूरा करने में एक बड़ी बदलाव होंगे, जिसके परिणामस्वरूप नए कुशल श्रम की आवश्यकता होगी, विशेषकर जीव विज्ञान, रसायन विज्ञान में। भौतिकी, कृषि, जलवायु विज्ञान और सामाजिक विज्ञान। महामारी और महामारी के बढ़ते उद्भव संक्रामक रोग प्रबंधन और टीकों के विकास में सहयोगी अनुसंधान के लिए भी कॉल करेंगे और परिणामी सामाजिक मुद्दे बहु-विषयक सीखने की आवश्यकता को बढ़ाते हैं। मानविकी और कला की बढ़ती मांग होगी, क्योंकि भारत एक विकसित देश बनने के साथ-साथ दुनिया की तीन सबसे बड़ी अर्थव्यवस्थाओं में से एक है।

शिक्षाशास्त्र को शिक्षा को अधिक अनुभवात्मक, समग्र, एकीकृत, जांच-संचालित, खोज-उन्मुख, सीखने-केंद्रित, चर्चा-आधारित, लचीला और निश्चित रूप से, सुखद बनाने के लिए विकसित करना चाहिए। पाठ्यक्रम में बुनियादी कला, शिल्प, मानविकी, खेल, खेल और फिटनेस, भाषा, साहित्य, संस्कृति और मूल्य शामिल होना चाहिए, विज्ञान और गणित के अलावा, शिक्षार्थियों के सभी पहलुओं और क्षमताओं को विकसित करना; और शिक्षा को अधिक अच्छी तरह से गोल, उपयोगी और सीखने वाले को पूरा करना। शिक्षा को चरित्र का निर्माण करना चाहिए, शिक्षार्थियों को नैतिक, तर्कसंगत, दयालु और देखभाल करने में सक्षम बनाना चाहिए, जबकि एक ही समय में उन्हें रोज़गार प्राप्त करने के लिए तैयार करना चाहिए।

उद्देश्य 2040 तक भारत के लिए एक शिक्षा प्रणाली होना चाहिए जो सामाजिक या आर्थिक पृष्ठभूमि की परवाह किए बिना सभी शिक्षार्थियों के लिए उच्चतम गुणवत्ता वाली शिक्षा के लिए समान पहुंच के साथ, किसी से पीछे नहीं है। यह राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, 21 वीं सदी की पहली शिक्षा नीति है और इसका उद्देश्य हमारे देश की कई बढ़ती विकासात्मक अनिवार्यताओं को संबोधित करना है। यह नीति भारत की परंपराओं और मूल्य प्रणालियों पर निर्माण करते हुए, SDG4 सहित 21 वीं सदी की शिक्षा के आकांक्षात्मक लक्ष्यों के साथ संरेखित एक नई प्रणाली बनाने के लिए, इसके नियमन और शासन सहित शिक्षा संरचना के सभी पहलुओं में संशोधन और संशोधन का प्रस्ताव करती है।

प्राचीन और सनातन भारतीय ज्ञान और विचार की समृद्ध विरासत इस नीति के लिए एक मार्गदर्शक प्रकाश रही है। ज्ञान (ज्ञान), ज्ञान (प्रज्ञा), और सत्य (सत्य) की खोज को हमेशा भारतीय विचार और दर्शन में सर्वोच्च मानवीय लक्ष्य माना जाता था। प्राचीन भारत में शिक्षा का उद्देश्य सिर्फ इस दुनिया में जीवन के लिए तैयारी, या स्कूली शिक्षा से परे जीवन के रूप में ज्ञान का अधिग्रहण नहीं था, बल्कि स्वयं की पूर्ण प्राप्ति और मुक्ति के लिए था। प्राचीन भारत के विश्व स्तर के संस्थानों जैसे तक्षशिला, नालंदा, विक्रमशिला, वल्लभ, ने बहु-विषयक शिक्षण और अनुसंधान के उच्चतम मानकों को निर्धारित किया और पृष्ठभूमि और देशों के विद्वानों और छात्रों की मेजबानी की। भारतीय शिक्षा प्रणाली में इस तरह के चरक, सुश्रुत, आर्यभट्ट, वराहमिहिर, भास्कराचार्य, ब्रह्मगुप्त, चाणक्य, चक्रपाणि दत्ता माधव, पाणिनी, पतंजलि, नागार्जुन, गौतम, पिंगला, शंकरदेव, मैत्रेयी, गार्गी और तिरुवल्लुवर के रूप में महान विद्वानों, कई अन्य लोगों के अलावा उत्पादन किया, जिन्होंने गणित, खगोल विज्ञान, धातु विज्ञान, चिकित्सा विज्ञान और सर्जरी, सिविल इंजीनियरिंग, वास्तुकला, जहाज निर्माण और नेविगेशन, योग, ललित कला, शतरंज और अधिक जैसे विविध क्षेत्रों में विश्व ज्ञान के लिए महत्वपूर्ण योगदान दिया। भारतीय संस्कृति और दर्शन का दुनिया पर गहरा प्रभाव रहा है। विश्व धरोहरों के लिए इन समृद्ध विरासतों को न केवल पोष के लिए पोषित और संरक्षित किया जाना चाहिए, बल्कि हमारी शिक्षा प्रणाली के माध्यम से शोध, संवर्द्धन और नए उपयोगों के लिए भी रखा जाना चाहिए।

शिक्षक को शिक्षा प्रणाली में मूलभूत सुधारों के केंद्र में होना चाहिए। नई शिक्षा नीति को हमारे समाज के सबसे सम्मानित और आवश्यक सदस्यों के रूप में, सभी स्तरों पर शिक्षकों को फिर से स्थापित करने में मदद करनी चाहिए, क्योंकि वे वास्तव में हमारी अगली पीढ़ी के नागरिकों को आकार देते हैं। शिक्षकों को सशक्त बनाने और उन्हें अपना काम प्रभावी ढंग से करने में मदद करने के लिए सब कुछ करना चाहिए। नई शिक्षा नीति को आजीविका, सम्मान, गरिमा, और स्वायत्तता सुनिश्चित करते हुए, सभी स्तरों पर शिक्षण पेशे में प्रवेश करने के लिए बहुत ही बेहतरीन और प्रतिभाशाली भर्ती करने में मदद करनी चाहिए, जबकि गुणवत्ता नियंत्रण और जवाबदेही के बुनियादी तरीकों में प्रणाली में भड़काती है।

****